क्रांतिदूत - भाग १ झाँसी फाइल्स "पुस्तक समीक्षा "

भारत के ऐतिहासिक दस्तावेजों में क्रांति के पन्ने इधर उधर बिखरे हुए पड़े हैं। एक सम्पूर्ण वांग्मय क्रांति के किसी भी नायक को स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी प्राप्त नहीं हुआ है। १९०९ में वीर सावरकर की पुस्तक "१८५७ का स्वतंत्रता समर" जब प्रकाशित हुआ, तब "१८५७ की क्रांति को" भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में पहचान प्राप्त हुई। यदि सावरकर जैसे राष्ट्रवादी नेता १८५७ की क्रांति का साहित्य/इतिहास लिखने का कष्ट न करते, तो १८५७ का वर्ष केवल छोटे मोटे संघर्ष के रूप में ही याद किया जाता। वह १८५७ की क्रांति ही थी जिसने अंग्रेजों को कम्पनी बंद करने पर मजबूर किया और भारत के जन प्रतिनिधियों को भारतीय व्यवस्था में जगह बनाने का मौका दिया।

इन्हीं भारत के जन प्रतिनिधियों को हम भारत के आधुनिक निर्माता के रूप में जानते हैं। जिस क्रांति ने इनको पहचान दिलाई, उसे ही इन्होंने बाद में नकारा कहकर उसका विरोध किया। इन्होंने इस बात पर अधिक जोर दिया की भारत उन्हें किस रूप में याद रखेगा, और यही कारण रहा की इन्होंने अपना साहित्य और अपने विचारों को लगातार छपवाया। क्रांति की पहचान को इन्होंने सदैव छिपाने का प्रयत्न किया। हमारे पास आज आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में पहचान बना चुके नेताओं के सम्पूर्ण दस्तावेज उपलब्ध हैं, पर जब क्रांति के किसी नायक को हम पढ़ना चाहते हैं, तब हमें बिखरे पड़े साहित्य/इतिहास के पन्नो को खोजना पड़ता है।

क्रांति १८५७ के अध्याय के बाद समाप्त नहीं हुई थी, उस अग्नि की लपटें किसी न किसी रूप में भारत के कोने कोने में समय समय पर प्रकट होती रहीं हैं। कभी कूका विद्रोह के रूप में भड़कीं तो कभी चाफेकर संघ के रूप में संघठित हुईं, कभी काकोरी काण्ड के रूप में प्रकट हुईं तो कभी गदर पार्टी के रूप में तैयार हुईं। यदि ठीक से समझा जाए तो इन सभी के तार कहीं न

कहीं एक दुसरे से जुड़े हुए थे, और इन्होंने भारत को संगठित रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इन सब तारों को जोड़ने का प्रयास कभी ठीक से नहीं हुआ, और हम क्रांति के कई नायकों से आज तक अंजान ही हैं।

डॉ. मनीष श्रीवास्तव "क्रांतिदूत पुस्तक श्रृंखला" में इन दस्तावेजों को जोड़ने का प्रयास करते हैं। इस प्रयास के लिए उन्हें कितना परिश्रम करना पड़ा होगा, उसे आप पुस्तक के अंतिम कुछ पन्नों में संदर्भ के रूप में देख ही सकते हैं। श्रृंखला की प्रथम पुस्तक क्रांतिकारियों के उस जीवन से परिचित करवाती है जो उन्होंने काकोरी काण्ड के बाद अज्ञातवास में रहते हुए बिताया। इसके केंद्र में है "झाँसी", "चंद्रशेखर आज़ाद" और आज़ाद जी के मित्र एवं बड़े भाई "मास्टर रुद्रनारायण सिंह"। काकोरी में हुई घटना के बाद जब क्रांतिकारियों ने पुलिस की दबिश से बचने के लिए कुछ समय अज्ञात जीवन जीने का निश्चय किया, तब आज़ाद को याद आए मास्टर रुद्रनारायण सिंह। झाँसी फाइल्स की कहानी यहीं से आगे बढ़ती है। झाँसी में कैसा था आज़ाद जी का जीवन? कौन थे मास्टर रुद्रनारायण जी? झाँसी में उनके और कितने साथी थे और उन्होंने भारत के इतिहास में किस तरह और किस रूप में अपने रंग छोड़े, ये सब जानने के लिए आपको यह पुस्तक पढ़नी चाहिए।

पुस्तक सर्व भाषा ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित की गयी है, इसका मूल्य १५० रुपये रखा गया है, जो पुस्तक की कथा के हिसाब से ठीक लगता है। पुस्तक की संदर्भ सूची को देखते हुए, इसमें बताई गयीं ऐतिहासिक घटनाओं के लिए लेखक ने जो परिश्रम किया है, वह भी दिखता है। पुस्तक की

जिल्दबंदी से थोड़ी परेशानी हुई, क्योंकि सभी पन्ने अलग अलग हो गए हैं। पुस्तक की अनुक्रमणिका में जो पृष्ठ संख्या बताई गयी है, वह अंदर की पृष्ठ संख्या से मेल नहीं खाती। इन छोटी छोटी समस्याओं को पुस्तक के अगले संस्करण में दूर किया जाना चाहिए। इन समस्याओं से कथा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, पृष्ठ संख्या की ग़लती पर मेरा ध्यान तब गया जब मैं इसे तीसरी बार पढ़ रहा था। कथा को सुनाने का और प्रस्तुत करने का अंदाज बेहतरीन है, लेखक की इस बात के लिए जितनी तारीफ़ की जाए वह कम है। यकीन मानिये इस पुस्तक को पढ़कर आप अपने जीवन से कुछ अनमोल ही जोड़ेंगे, तुरंत मंगवाइये और पढ़िए "क्रांतिदूत"

पुस्तक मंगवाने के लिए : https://www.amazon.in/-/hi/Dr-Manish-Shrivastva/dp/9393605149/ref=sr_1_3?crid=1HAM9EA75P0SU&keywords=krantidoot&qid=1651059884&s=books&sprefix=kranti%2Cstripbooks%2C347&sr=1-3

ई बुक के रूप में यहाँ पढ़ें:
https://books.google.co.in/books?id=SLtpEAAAQBAJ&source=gbs_navlinks_s

@Prad_Rajput - प्रदीप राजपूत

B/2 - 404 Madhuvan Glory Nava Naroda , Ahmedabad Gujarat - 382330 +91-8866634116